नितिन प्रमोद (भारतीय विदेश सेवा में चयनित)

दृष्टि The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) ....

125735

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

नाम (Name) Nitin Pramod .... विषय (Subject) निबंध ... तिथि (Date) 14/9/08

पता (Address) .... Delhi ... फोन नंबर (मोबाइल) ....

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

{ वैश्विक आतंकवाद: स्थिति और समाधान }

"वातावरण में अजीब सी दहशत है,
कि वह कौन है,
जो हमारी रगों में खून नहीं
त्रास दौड़ा जाता है।"

कवि, राजेंद्र कुमार की उपरोक्त पंक्तियाँ अनायास ही दिमाग में कौंध जाती हैं, जब भी कोई 'आतंकवाद' का ज़िक्र भी करता है। वर्तमान समय में विश्व के समक्ष विभिन्न प्रकार के संकट उपस्थित हैं किंतु इन सबमें सर्वाधिक विकट संकट है-आतंकवाद।

वैसे तो अभी तक आतंकवाद की सर्वस्वीकृत वैश्विक परिभाषा नहीं बनी है तथापि मोटे तौर पर, किसी विचारधारात्मक आधार पर की गई हिंसा, जिसमें बड़ी तादात में निर्दोष आम जनता मारी जाती है - आतंकवादी घटना कहलाती है। आतंकवाद का क्षेत्र विस्तार अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है। पूर्व में कुछ क्षेत्रों तक सीमित रहने वाले आतंकवाद ने आज संपूर्ण विश्व में अपने पैर पसार दिए हैं। इस बात का उदाहरण इसी बात से मिलता है कि विभिन्न देशों के

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

> द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों में तथा विभिन्न वैश्विक संगठनों की बैठक में, आतंकवाद का मुद्दा और इस पर रणनीति की बातचीत अनिवार्य - सी हो गई है जिससे प्रश्न उठता है कि वास्तव में आतंकवाद है क्या? क्या उग्रवादी हिंसा, डकैतों की लूटपाट, तथा नक्सलवाद व क्षेत्रवाद की हिंसाएँ आतंकवादी कार्रवाइयाँ नहीं हैं? यदि नहीं, तो इनमें अंतर क्या है? आतंकवाद के विशिष्ट गुण क्या हैं? वैश्विक तथा भारतीय परिस्थितियों में आतंकवाद का प्रसार कितना है? इसके संगठन कौन से हैं? इसके कारण, रूप और उद्देश्य क्या हैं? और अंतिम प्रश्न यह कि 'आतंकवाद' की समस्या का समुचित समाधान क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर हम आतंकवाद का विवेचन और विश्लेषण करके समझ सकते हैं।

उग्रवाद तथा डाकुओं द्वारा की गई हिंसा को आतंकवाद की श्रेणी में नहीं रखते हैं। कारण यह कि उग्रवाद, मूलतः वैचारिक उग्रता तक सीमित होता है। इसमें अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हिंसा का सहारा नहीं लेते जबकि आतंकवाद का एक प्रमुख आधार ही हिंसा है। इसी प्रकार, डाकुओं द्वारा की गई निर्दोष लोगों की हत्याएँ भी आतंकवाद में शामिल नहीं की जाती हैं। कारण यह कि डकैतों द्वारा डकैती करने में उनका निजी स्वार्थ छिपा रहता है; साथ ही उनकी कोई विचारधारा भी नहीं होती। इसके विपरीत आतंकवाद एक ठोस व निश्चित विचार पर आधारित होता है और इस विचार के समर्थक लोग इसे इतना पवित्र और ऊँचा स्थान देते हैं कि इसके

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिए वे न किसी को मारने से डरते हैं, न खुद के मरने से। आतंकवाद का ही छोटा रूप भारतीय परिप्रेक्ष्य में नक्सलवाद है। है तो यह आतंकवाद ही किंतु पश्चिम बंगाल के एक क्षेत्र 'नक्सल' से प्रारंभ होने के कारण, इसे नक्सलवाद कहा गया।

क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से आज, संपूर्ण विश्व ही आतंकवाद का आँगन हो गया है। अपने आरंभिक समय में आतंकवाद का प्रसार विश्व के कुछ खास क्षेत्रों तक सीमित था जैसे - कश्मीर; चेचन्या; तथा पश्चिम व मध्य एशिया के कुछ देशों में। किंतु इसकी गति, अमेरिका में ग्यारह सितंबर को विश्व व्यापार केंद्र को नष्ट होने के बाद बहुत तेजी से बढ़ी। इस संदर्भ में यूनाइटेड किंगडम में हुए ट्यूब ट्रेनो में विस्फोट तथा हीथ्रो हवाई अड्डे पर विस्फोट को उदाहरणस्वरूप देख सकते है। रूस के चेचन्या, बांग्लादेश में पिछले वर्ष हुए एक ही दिन में सैकड़ो विस्फोट; श्री लंका में एल॰टी॰टी॰ई॰ द्वारा कोलंबो के सैन्य बेस पर हमला; अफगानिस्तान में आए दिन होने वाले विस्फोट तथा हाल ही मे भारतीय दूतावास पर हमला; पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो तथा पूर्व में भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की हत्या, आतंकवाद के घिनौने और अमानवीय उदाहरण है।

भारत में मुंबई, जयपुर, लखनऊ, बनारस, फैजाबाद आदि शहरों के साथ ही साथ अजमेर शरीफ, तथा अक्षरधाम मंदिर

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(गुजरात) जैसे धार्मिक स्थलों को भी आतंकवादियों ने अपना निशाना बनाया। कश्मीर में तो आए दिन आतंकी कार्रवाईयाँ होती ही रहती हैं। पिछले दिनों में बंगलौर और अहमदाबाद जैसे औद्योगिक शहरों में भी बम विस्फोट हुए तो अभी कल ही देश की राजधानी दिल्ली में श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोटों में सैकड़ो लोगों की जानें गईं। खुफिया एजेंसियों ने पहले ही सूचित किया था कि आतंकवादियों का कोई 'बैड' (BAD) है, जो वास्तव में उपरोक्त शहरों को ही सूचित करता था। अब तक का बड़ा विस्फोट, जिसने भारतीय संप्रभुता व अस्मिता को चुनौती दी - '~~[illegible]~~ संसद पर हुआ हमला था।

इन कार्रवाईयों के पीछे कुछ प्रमुख संगठनों का हाथ होता है जिनमें प्रमुख रूप से - लश्कर-ए-तैयबा, हिजबुल मुजाहिद्दीन, इंडियन मुजाहिद्दीन, हूजी, एल.टी.टी.ई तथा उल्फा आदि हैं।

राजनीतिज्ञों, समाजशास्त्रियों तथा समाज के बुद्धिजीवी वर्ग ने आतंकवाद के प्रसार हेतु कुछ कारणों को जिम्मेदार ठहराया है। इनमें मुख्य रूप से आर्थिक असमानता, गरीबी, पिछड़ापन आदि शामिल हैं। कुछ लोग इसके लिए 'सामी धर्मों' (यहूदी, ईसाई, इस्लाम) में पाए जाने वाले गुण 'धार्मिक व्यावर्तवाद' (धार्मिक कट्टरता) को भी जिम्मेदार मानते हैं। इन बातों का परीक्षण करें तो हम पाते हैं कि उपरोक्त बातें कुछ हद तक तो सही हैं, पर पूर्णतः नहीं। वास्तव में ये सारे कारण, निचले

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009.
दूरभाष :-011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्तरों पर आतंकवादियों की फौज तैयार करने के काम में आते हैं न कि आतंकी संगठनों के सरगना को बनाने में। आतंकवादी संगठनों के मुखिया वास्तव में, उच्च शिक्षित लोग हैं, जो अकूत संपदा के स्वामी भी हैं, उदाहरण स्वरूप- 'ओसामा-बिन-लादेन';- जो लश्कर-ए-तैयबा का प्रमुख है;- अमेरिकी विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग का डिग्री धारक है, साथ ही अरबों डॉलर का मालिक। इसी प्रकार जवाहिरी व प्रभाकरण आदि आतंकवादी संगठनों के प्रमुखों को उदाहरण स्वरूप देख सकते हैं। अब प्रश्न उठता है कि उच्च शिक्षित व अमीर लोगों को आतंकवादी कार्रवाई की जरूरत क्यों थी? इसका सही उत्तर है- "सापेक्ष वंचन" की भावना। सापेक्ष वंचन से तात्पर्य है कि एक वर्ग को, दूसरे की तुलना में लगे कि वह पक्षपात या भेदभाव का शिकार है। ऐसा वंचन वास्तव में हो किंतु चाहे न उसका लगना ही पर्याप्त है। 'सापेक्ष वंचन' की भावना को विद्वानों ने आतंकवाद की जड़ माना है।

इस सापेक्ष वंचन का बड़ा कारण पश्चिमी देशों का तीव्र विकास रहा। एक ही मुख्य धर्म-, 'यहूदी', से निकलने वाले दो धर्मों - ईसाई व इस्लाम के मध्य सामाजिक, आर्थिक स्तर पर विकास का इतना बड़ा अंतर, सापेक्ष वंचन की भावना को 'इस्लामी समूह' में जन्म देता है, ऐसा कुछ विद्वानों का मानना है। फिर एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अमेरिकी दादागिरी ने भी आतंकवाद

दृष्टि The Vision
दृष्टि The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

को उकसाने में काफी सहायता की। पश्चिम व मध्य एशिया के तेल देशों पर अमेरिकी हमले ने, इस्लामी आतंकवादियों को अपने अस्तित्व को बचाने हेतु, प्रेरित किया। रूस के पूर्व राष्ट्रपति पुतिन का कथन भी है कि "अमेरिकी नीतियों से दुनिया सुरक्षित होने के बजाय अधिक असुरक्षित हो गयी है।" इस प्रकार हम देखते हैं कि एकल ध्रुवीय विश्व व्यवस्था भी कुछ हद तक इसके लिए जिम्मेदार है।

1990 के दशक में सोवियत संघ के विघटनोपरांत "फ्रांसिस फुकोयामा" ने "इतिहास के अंत" की बात की तो 'डेनियल बेल' ने 'विचारधारा के अंत' की। किंतु आगे चलकर प्रसिद्ध पाश्चात्य चिंतक सैमुअल पी० हंटिंगटन ने कहा कि इतिहास समाप्त नहीं हुआ है बल्कि "विचारधाराओं के संघर्ष" (क्लैश ऑफ सिवलाइजेशन) के रूप में आगे बढ़ेगा। ईसाई व इस्लाम धर्मों की टकराहट के रूप में भी आतंकवादी घटनाओं को विभिन्न विचारकों द्वारा देखा जाता है। किंतु वास्तव में देखें तो यह आर्थिक स्तर पर संघर्ष अधिक प्रतीत होता है, धार्मिक स्तर पर कम।

हाल ही में एक नई बहस अमेरिकी पत्र "न्यूयार्क टाइम्स" ने छेड़ दी। इस पत्र के अनुसार 9/11 की अमेरिकी घटना में आतंकवादियों के

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

साथ-साथ अमेरिका व इस्राइल भी दोषी है।
~~किंतु अधिक सबूतों से~~ कारण यह कि अमेरिका, ईराक पर आक्रमण करने का बहाना खोज रहा था। किंतु वास्तव में देखे तो यह एक अत्यंत गंभीर आरोप है और जब तक इस बात की पुष्टि न हो जाए इस पर कुछ भी कहना अनुचित है।

अब यदि हम आतंकवाद के रूप को देखें तो ये मुख्यत: दो प्रकार के दिखाई देते हैं- प्रथम राज्य समर्थित तथा द्वितीय राज्य विरोधी। राज्य समर्थित आतंकवाद के अंतर्गत कुछ विद्वान इस्राइल जैसे देशों की नीतियों को रखते हैं। राज्य विरोधी आतंकवाद को उदाहरण मे भारत के प्रथम चरण के क्रांतिकारी आतंकवाद को देख सकते हैं। पुन: एक अन्य आधार पर आतंकवाद को दो वर्गों में बांट सकते हैं - प्रथम मे भाषायी; नृजातीय; धार्मिक आदि आधारों पर किया जाने वाला आतंकवाद है। दूसरे वर्ग में विचारधारात्मक आधार पर किए जाने वाले आतंकवाद को रख सकते है. जिसमें मार्क्सवादी, लेनिनवादी ~~तथा~~ तथा माओवादी विचारधारा के आधार पर होने वाली आतंकी घटनाएँ आती हैं।

आतंकवादियों का प्रमुख उद्देश्य देखें तो हमें पता चलता है कि- जिस वर्ग, जाति, समुदाय, धर्म या देश की तुलना मे ये अपने को वंचक की स्थिति मे पाते है, उसे अपने बराबर लाने के लिए (सभ्यता के स्तर पर) तथा अपनी श्रेष्ठता मनवाने के लिए (

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शक्ति के स्तर पर) ये कार्य करते है और इस हेतु दुनिया को आतंकी कार्रवाईयो से भयाक्रांत करना इन्हें सबसे आसान, सुविधाजनक व कारगर तरीका लगता है।

इन सब परिप्रेक्ष्यो में हमारे मस्तिष्क में प्रश्न उठता है कि क्या इस अमानवीय, पाशविक घृणित व जघन्य घटना व कार्रवाई का कोई समाधान भी है या नहीं? वास्तविकता यह है कि किसी भी समस्या का समाधान होता ही है। क्योंकि, आतंकवाद एक वृहद जटिल समस्या है अतः इसका समाधान भी कई स्तरो पर करना होगा। इसके लिए कुछ दीर्घकालिक व कुछ अल्पकालिक कार्यक्रम बनाने होंगे। दीर्घकालीन प्रावधानो में निम्न कार्यक्रम बनाने चाहिए - प्रथम, विश्व के सभी देशों के बीच व सभी देशों के सभी वर्गों, जातियों, समूहो के मध्य सामाजिक न्याय, व अधिकार की पहुँच बनाना। द्वितीय यह कि वैश्विक गाँव की संकल्पना में विभिन्न देशों की संस्कृतियों को एक सांचे में ढालने की कोशिश न की जाए। इसके लिए भारत की सामासिक संस्कृति को उदाहरण स्वरुप सामने रख सकते हैं। तृतीय यह कि गाँधीवादी विचारधारा तथा सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता पर संपूर्ण विश्व बल दे। चतुर्थ - शिक्षा व स्वास्थ्य तथा अन्न की सम्भा सब को उपलब्ध हो। अंतिम

दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष :-011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह कि मानवाधिकारों तथा सामाजिक व मूल्य-गत लोकतंत्र को बढ़ावा दिया जाये न कि राज-नीतिक लोकतंत्र की स्थापना हेतु, बल प्रयोग का उपयोग किया जाये।

इन दीर्घकालीन उपायों के अतिरिक्त हमें कुछ अल्पकालीन व त्वरित कार्रवाई के उपाय भी अपनाने चाहिए जैसे- प्रथम, विश्व स्तर पर आतंकवाद की सामान्य परिभाषा तय कर उसे पर सभी देशों को शामिल कर आतंकवाद के खात्मे हेतु एक व्यापक संधि की जाये। द्वितीय यह कि आतंकवादी कार्रवाईयों में लिप्त लोगों व आतंकियों को शीघ्रातिशीघ्र न्याय कर कठोर दण्ड दिया जाये। तृतीय- आम जनता को आतंकी कार्रवाई से बचने का प्रशिक्षण दिया जाए। (हाल की दिल्ली बम विस्फोटों में लोगों को प्रशिक्षण प्राप्त होने के कारण ही इन क्षेत्रों में जनधन की हानि कम करने में मदद मिली थी)। चतुर्थ- खुफिया एजेंसियों का एक समन्वित ढाँचा तैयार किया जाये। और अंतिम तौर पर अमेरिकी तथा रूसी पद्धति को आतंकवादियों से निपटने के लिए अपनाया जाए। इन नीतियों में आतंकवादियों को मुँह तोड़ जवाब देने की पद्धति अपनायी जाती है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि आतंकवाद की संपूर्ण विवेचना के साथ

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यदि हम अपरोक्त समाधान को अपनाएँ, तो आतंकवाद, आने वाली पीढ़ियों के लिए अतीत की घटना बन जाएगी। हम आशा कर सकते हैं कि वैश्विक एकजुटता के सामने, आतंकवाद नहीं ठहर सकेगा। आशा व आत्म विश्वास के साथ हम कह सकते हैं—

"हम होंगे कामयाब हम होंगे कामयाब एक दिन
मन में है विश्वास पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन
होगी शांति चारो ओर होगी शांति चारो ओर एक दिन
मन में है विश्वास पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन।"

बेहद प्रभावशाली प्रस्तुत करने के लिए

125 / 125

दृष्टि The Vision